

04 <sup>01</sup>/<sub>22</sub>

पसावली पेस ही कुलाप पारीकेन एरिटे  
 उवृ प्रकाश ले सक्किनेर गुलाकाड का गिदुपण  
 ही युका ही कल्पित आवडन 212 रति का  
 कोर आशिल्ल जरी ही अतः आवडन  
 212 रति को व्वाशिन किम नाग ही पसावली  
 फल गुहाट होकर जवळ ले का होकर  
 गिदुपण करल ही

५  
 +